भगवान के अस्तित्व को नकारने का एक और सैद्धांतिक आधार डार्विन का विकासवाद का सिद्धांत है। आइये अब इस पर विचार करे...

1. डार्विन का सिद्धांत केवल शारीरिक संरचना पर आधारित है।इसका मतलब डार्विन यह मानता है कि जीवित व्यक्ति के पास केवल शरीर है। जीवित व्यक्ति के पास मन, बुद्धि आदि कुछ नहीं है। और विडंबना यह है कि डार्विन का सिद्धांत डार्विन के बुद्धि की ऊपज है।

2. डार्विन का सिद्धांत सरल से जटिल तक शरीर की संरचना के क्रमांकन पर आधारित है। महान! हमारे पास लोहे की बहुत सरल संरचना है - पिन। लेकिन पिन से जटिल लोहे की संरचना अपनेआप बन गयी ऐसा सोचना मुर्खता है। इसके पीछे मनुष्य की बुद्धि एवं परिश्रम है। दोनों में इस्तमाल किये गये लोहे की उत्पत्ति एक ही है- पृथ्वी की पपड़ी। फिर इस बात कैसे जोर दिया जा सकता है कि जटिल जीवित संरचनाएं सरल से अपनेआप विकसित हुईं। यह क्यों संभव नहीं है कि वे एक ही स्रोत से उत्पन्न हुई हो और इसके पीछे भगवान का दिमाग हो?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

3. इस सिद्धांत का समर्थन करने वाले जीवाश्म के कालानुक्रम का तर्क देते है। यह तर्क मानता है कि पृथ्वी की परतें अब भी पृथ्वी पर उसी क्रम से बरकरार हैं जैसे वे जीवन की शुरुआत से थी। लेकिन क्या भूगर्भीय उथल-पुथल इन परतों को अरबों वर्षों तक बरकरार रखेगी? असंभव!

4. फिर मानव जाति और अन्य प्रजाति में जमीन आसमान का अंतर है। और किसी भी प्रजाति के प्राणी

मनुष्यों का कोई मुकाबला नही कर सकते। मानव जाति अंतरिक्ष की खोज कर रही है, जबकि बंदर जो मानव जाति के सबसे करीब हैं, अभी भी जंगलों की खोज कर रहे हैं !! वे घरों का निर्माण नहीं कर सकते, उनके पास कपड़े नहीं हैं और उनके पास यात्रा करने के लिए बैलगाड़ी भी नहीं है। क्या ये क्रमिक विकास है?

क्यों एक तरफ मानव जाति की मस्तिष्क क्षमताओं और दूसरी तरफ जानवरों की मस्तिष्क क्षमताओं में इतना जबरदस्त अंतर है? मस्तिष्क की क्षमताओं का क्रमिक विकास क्यों नहीं है? डार्विन के पास इस का कोई जवाब नहीं है!

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जबाब हिंदु दर्शन देता है। भगवान ने इस दुनिया को बनाया है या प्रकट किया है और केवल मानव जाति को ऐसे कर्म करने का अधिकार दिया है जिसका फल कर्म करने वाले भोगना पडता है। अन्य प्रजातियों को ऐसे कर्म करने का अधिकार नहीं है। वे प्रजाति मानव रूप में किए गए कार्यों के परिणामों को भोगने के लिए हैं।

मनुष्य योनी कर्म योनी है और बाकी सब भोग योनी है। इसलिए मनुष्यों को कर्म करने से पहले इस ज्ञान की आवश्यकता है कि सही क्या है गलत क्या है। अच्छा क्या है बुरा क्या है। पाप क्या है पुण्य क्या है। इसीलिए विशेष बुद्धि का होना अनिवार्य है। और बाकी सब प्रजाति के जीवों को केवल मानव जन्म में किये हुए कर्मों के अनुसार सुख दुःख भोगना होता है। इसके लिये कोई विशेष क्षमता की जरुरत जरूरत नही पडती। इसीलिए उनकी बुद्धि मनुष्यों की तरह विकसित नही होती।